साथजी ऐसी मैं तुमारी गुन्हेगार

साथजी ऐसी मैं तुमारी गुन्हेगार।। टेक।।
कर कर बानी सुनाई तुम को, किए खलक खुआर।
अनेक पख देखाए तुम को, छोड़ाए के प्रवार।।

कुटम कबीले मांहें अपने, बैठे हते करार।
साख दे दे भाने सोई, दिए दुख अपार।।

सुख सीतल सों अपने घर में, कई भांतों करते प्यार।
सो सारे कर दिए दुस्मन, जासों निस दिन करते विहार।।

ऐसे सुख कहूं मैं केते, घर बड़े बड़ो विस्तार।
सो सारे अगिन होए लागे, जब मैं कहे सब्द दोए चार।।

यों कई छल मूल कहूं मैं केते, मेरे टोने ही को आकार।
ए माया अमल उतारे महामत, ताको रंचक न रहे खुमार।।